कोकिला का मस्त मटका

गीता धर्मराजन

चित्राँकन: सुजाता सिंह

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ेंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

v/;kid@v/;kfidkvk d fy,

cM mnn'; Ük[kyk – इस श्रृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

dkfdyk dk eLr eVdk कहानी बताती है कि साफ पानी पीने से अधिकतर बीमारियों से बचा जा सकता है। शिक्षार्थियों को सफाई के महत्व एवं पृथ्वी के सभी जलाशयों का महत्व सिखाएँ।

कोकिला का मस्त मटका

गीता धर्मराजन

चित्रांकनः सुजाता सिंह

क

“आओ, ख़रीदो! आओ, ले जाओ!” अनोखे कुम्हार रामकुमार ने पुकारा।

रामकुमार हमेशा एक ही चीज़ लाता था बेचने के लिए – पर होती थी वह हमेशा निराली!

“याद है उसकी मिट्टी की मुर्गी, जो अंडे देती थी?” मंजरी ने पूछा।

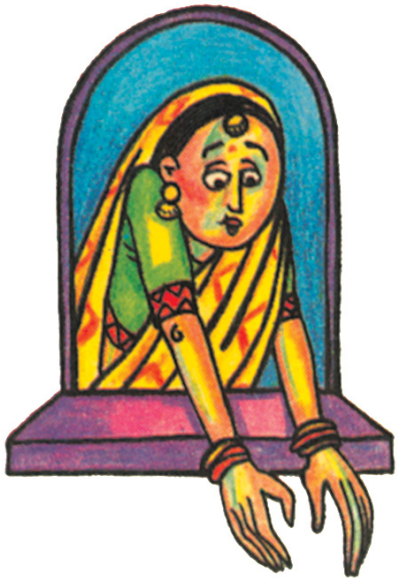

"और उसका मिट्टी का जादूई हाथी जिसने हमारे छोटे-से जंगल को पानी देने में मदद की थी?"

किसान की बीबी शीबा बोली, "आज उसके पास जो मटका है वह मुझे चाहिए।"

पर इससे पहले कि वह मटका झपट लेती, मटका कोकिला के हाथ लग गया।

कोकिला चल पड़ी नदी की ओर, लोगों के चेहरों पर थोड़ी-सी जलन देखकर मुस्कराती हुई।

पर कोकिला के मटके को
न तो झील पसंद आई, न
तालाब, और न ही कुआँ।

मटकता-मटकता मटका
चलता रहा।

"ऐई! वापस आ!" कोकिला चिल्लाई और उसके पीछे-पीछे कूदती-फांदती सीधे पानी के नए पम्प तक गई,

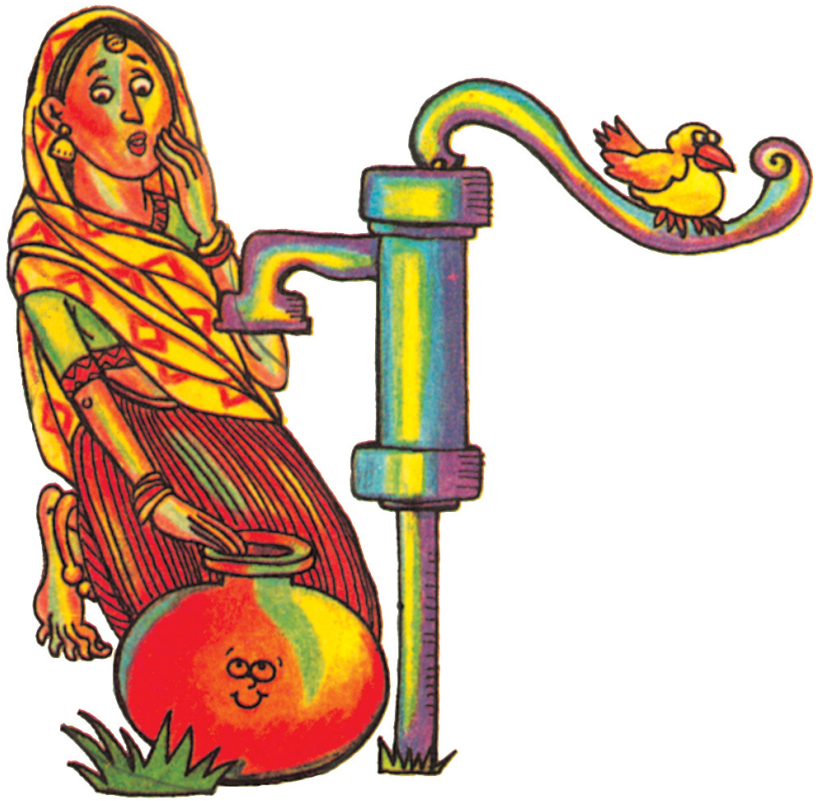

"वापस आ! पम्प के पानी का स्वाद अच्छा नहीं होता!" पर मटका नहीं माना।

"पम्प के पानी से खाना पकाओगी कोकिला?" शीबा ने ताना मारा।

"क्यों नहीं?" कोकिला ने गुस्से से पूछा, "पम्प का पानी तो मेरे परिवार के लिए अच्छा है। दाई भी तो यही कहती है, पर उसकी सुनता कौन है!"

कोकिला मटकती हुई गई और पम्प चलाने लगी।

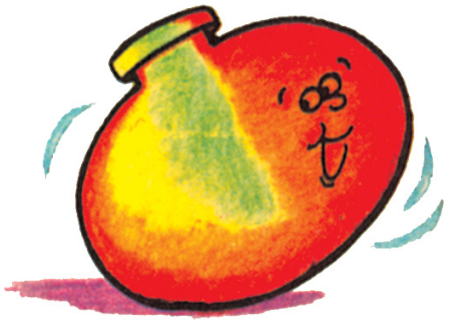

मटका डोला, थिरका,
नाचा, फिर गायब हो गया।

वापस आया तो एक
ढक्कन के साथ!

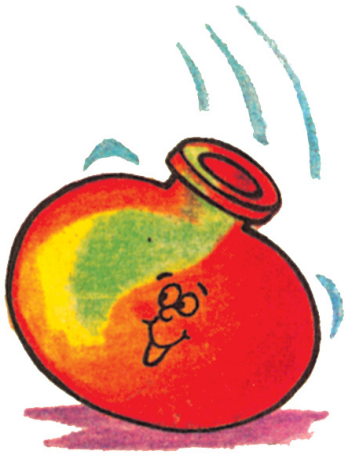

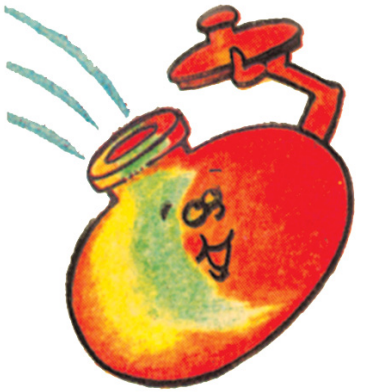

कोकिला के पास हमेशा
ख़ास चीज़ें होती हैं,''
कमला बुदबुदाई।

कोकिला ने मटके को गुस्से से देखा, पर मटका तो बैठा था मस्त मुस्काता।

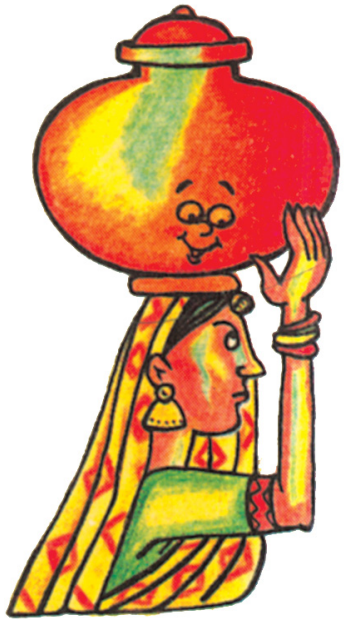

जब कोकिला ने पानी भर लिया, तो मटके ने ढक्कन ढका और घर तक मुस्काता ही रहा।

उसके बाद से, कोकिला का
मटका तो जैसे घर का मालिक ही
बन बैठा!

उसके पति रामू को यह बात
बिल्कुल अच्छी नहीं लगी कि,
कोकिला मटके के इर्द-गिर्द नाचे।

और फिर मटके को कितनी
चीज़ें चाहिए थीं ... बैठने के लिए
एक चौकी, एक लम्बे हत्थेवाला
प्याला, साफ़ हाथ ...

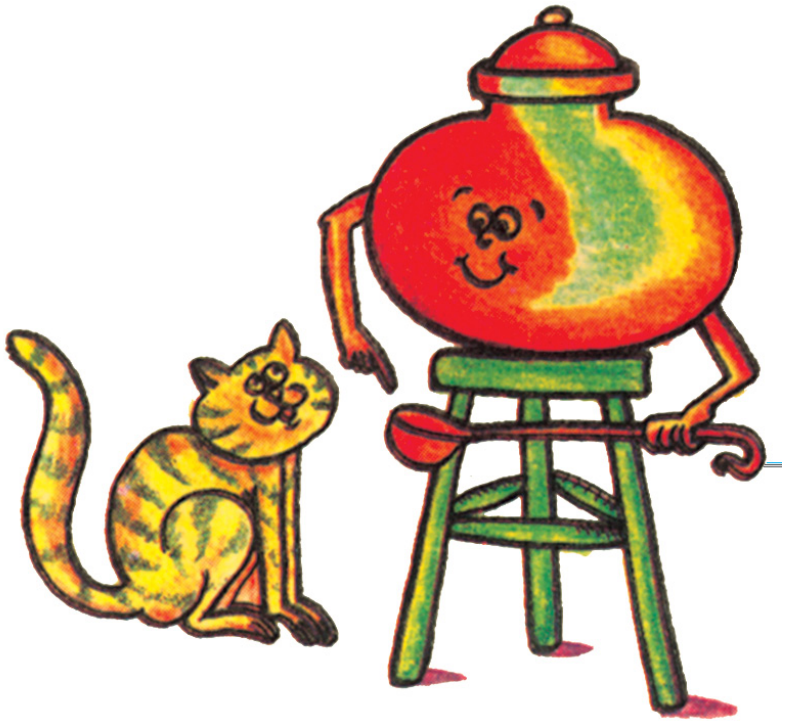

यही नहीं, कोकिला को हर दिन मटके को धोकर धूप में सुखाना भी पड़ता था।

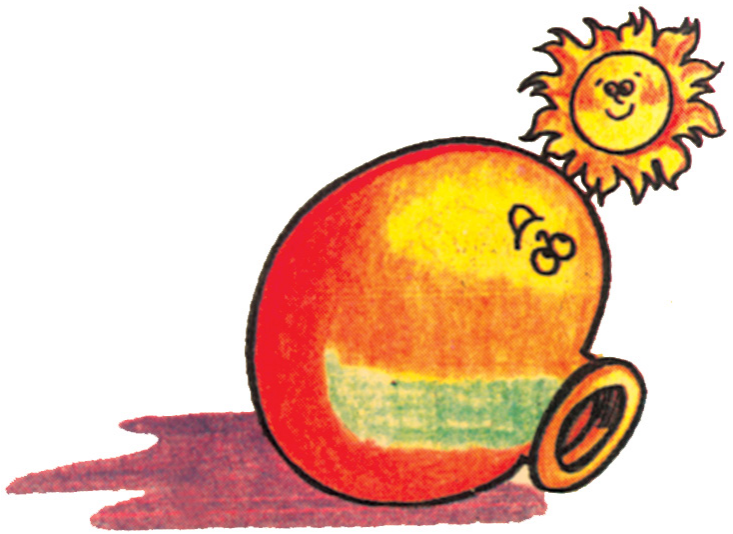

फिर एक दिन कोकिला का पति रामू, अपने गंदे हाथ मटके में डालने ही वाला था कि ...

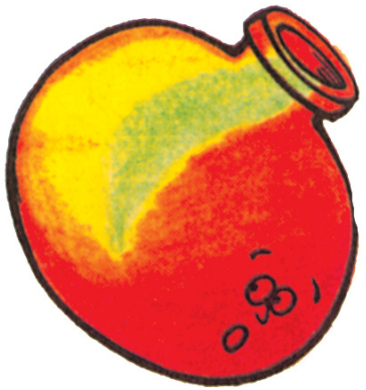

मटका उसके हाथ से छिटक कर दूर चला गया।

“तुम ... तुम!” रामू ने गुस्से-से कहा।

उसने मटका उठाया और इससे पहले कि कोकिला उसे रोक पाती, मटके को ज़मीन पर पटक दिया!

कोकिला बहुत रोई।

“एक साल से, जबसे यह मटका आया है, गुड्डी एक बार भी बीमार नहीं पड़ी! हाय ... अब मैं क्या करूँगी?”

उस रात कोकिला को एक अनोखा सपना आया। सपने में उसे मटका दिखा। मटके ने कहा,

“कोकिला मैं कोई जादुई मटका नहीं था! अगर तुम मटके की ठीक से देखभाल करो, तो कोई भी मटका गुड्डी को स्वस्थ रख सकता है।”

“कैसे?” कोकिला ने हैरान होकर पूछा।

“यदि तुम वही करो जो तुमने मेरे लिए किया था,” मटके ने जवाब दिया।

कोकिला मुस्काई “मुझे तुम्हारी याद आएगी,” उसने धीरे से कहा, “मैं तुम्हें धन्यवाद कैसे दूँ?”

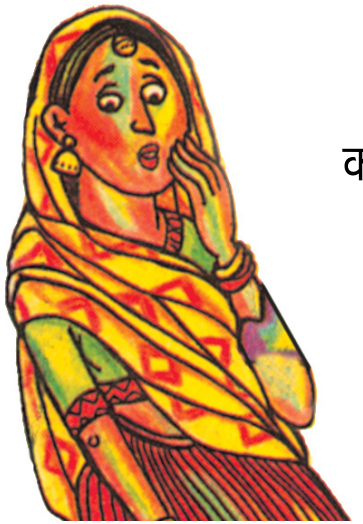

“सभी गाँव की औरतों
को इसके बारे में बताकर,”

आज, कोकिला का
गाँव, ज़िले का सबसे
स्वस्थ गाँव है।

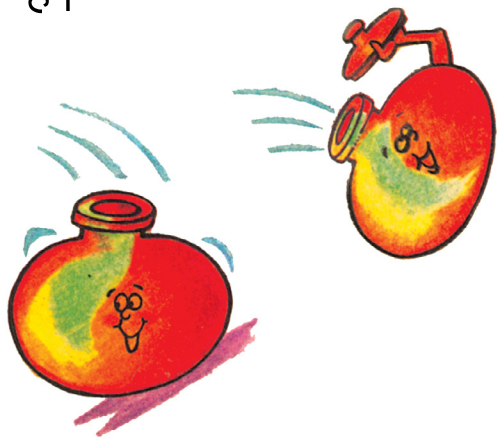

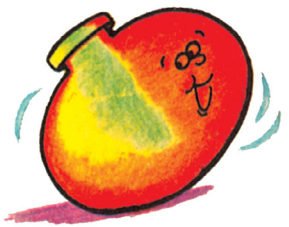

मटके ने कहा और धीरे-धीरे
आँखों से ओझल हो गया।

क्या तुम बता सकते
हो क्यों?

थोड़ी जानकारी, थोड़ा मज़ा!

क्या तुमने कभी सोचा है कि, हम जो पानी पीते हैं वह कहाँ से आता है?

झरनों से

नदियों से

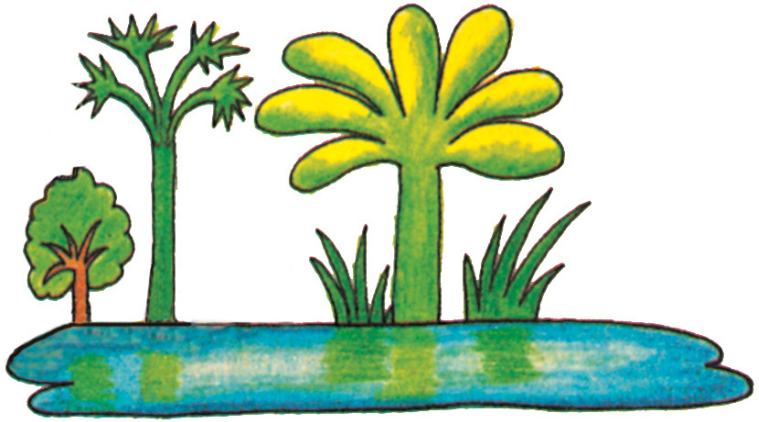

तालाबों से

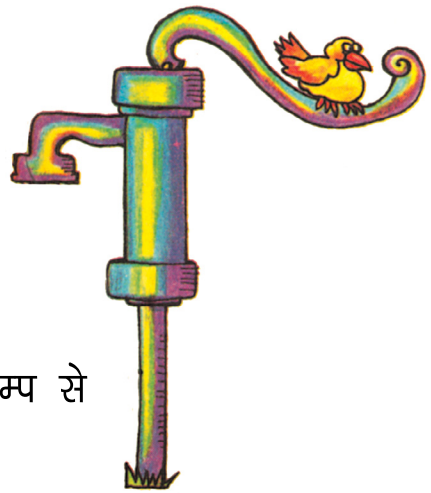

हैंडपम्प से

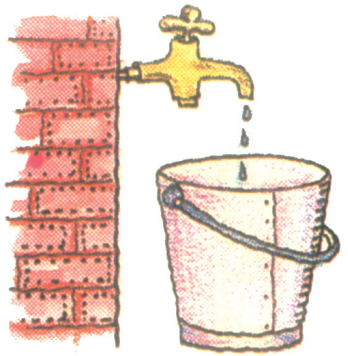

कुओं और
नल से भी!

चित्राँकनः जय एवं
वंदना बिष्ट

जल चक्र

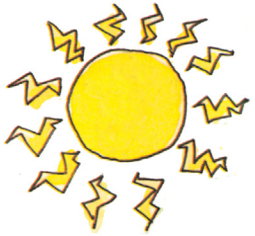

इसकी गर्मी से तपते
हैं जल स्रोत

सू		

गर्म हुए पानी से

नन्हीं नन्हीं बूंदों
के संग्रह हैं ये

बा		

भारी हो जाते हैं
जब पानी से ये

फिर गिरती है
रिमझिम धरती पर

व	

और हो जाते हैं फिर
लबालब, जल संग्रह।

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

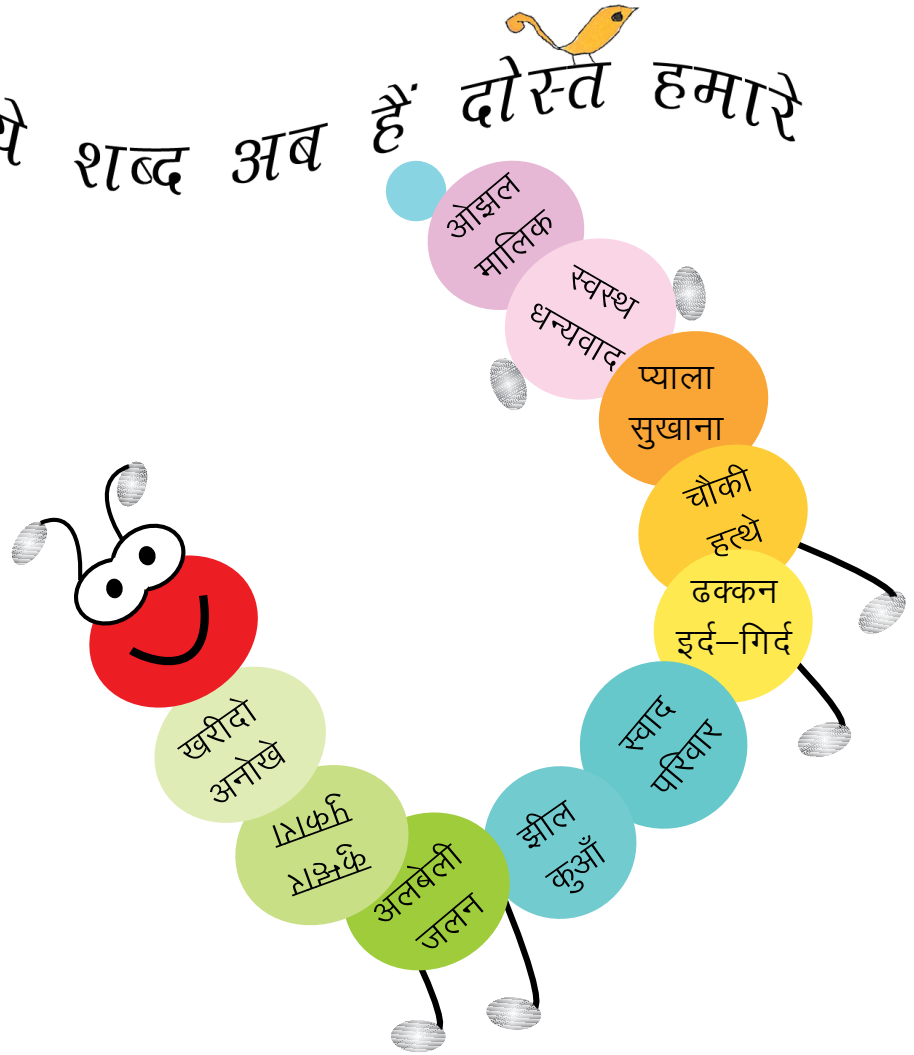

xhrk /kejktu बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह टारगेट पत्रिका और पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका पेन्सिलवेनिया गज़ेट की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

l;tkrk flg एक वरिश्ठ कलाकार, डिज़ाइनर एवं षिक्षिका हैं। इन्होंने विंबलडन स्कूल ऑफ आर्ट एंड डिज़ाइन, लंदन, से ग्राफ़िक डिज़ाइन और इलस्ट्रेशन में तीन साल का डिप्लोमा प्राप्त किया है और टारगेट, इंडिया टुडे, कथा, पेंगुइन बुक्स इत्यादि पत्रिकाओं और प्रकाषन केन्द्रों के साथ डिज़ाइनर एवं चित्रकार के रूप में काम किया है।

सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम

झट-पट सीखें अक्षर हम।

200 दोस्त बनें कम से कम

तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

KATHA

यह कहानी "तमाशा" में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010,
पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2013

कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

एजियन ऑफ्सेट, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-92-7
संपादकीय टीमः वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4141 6600, 4182 9998, फैक्सः 2651 4373
ई मेलः ilr@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

प्रोडक्शन टीमः प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार

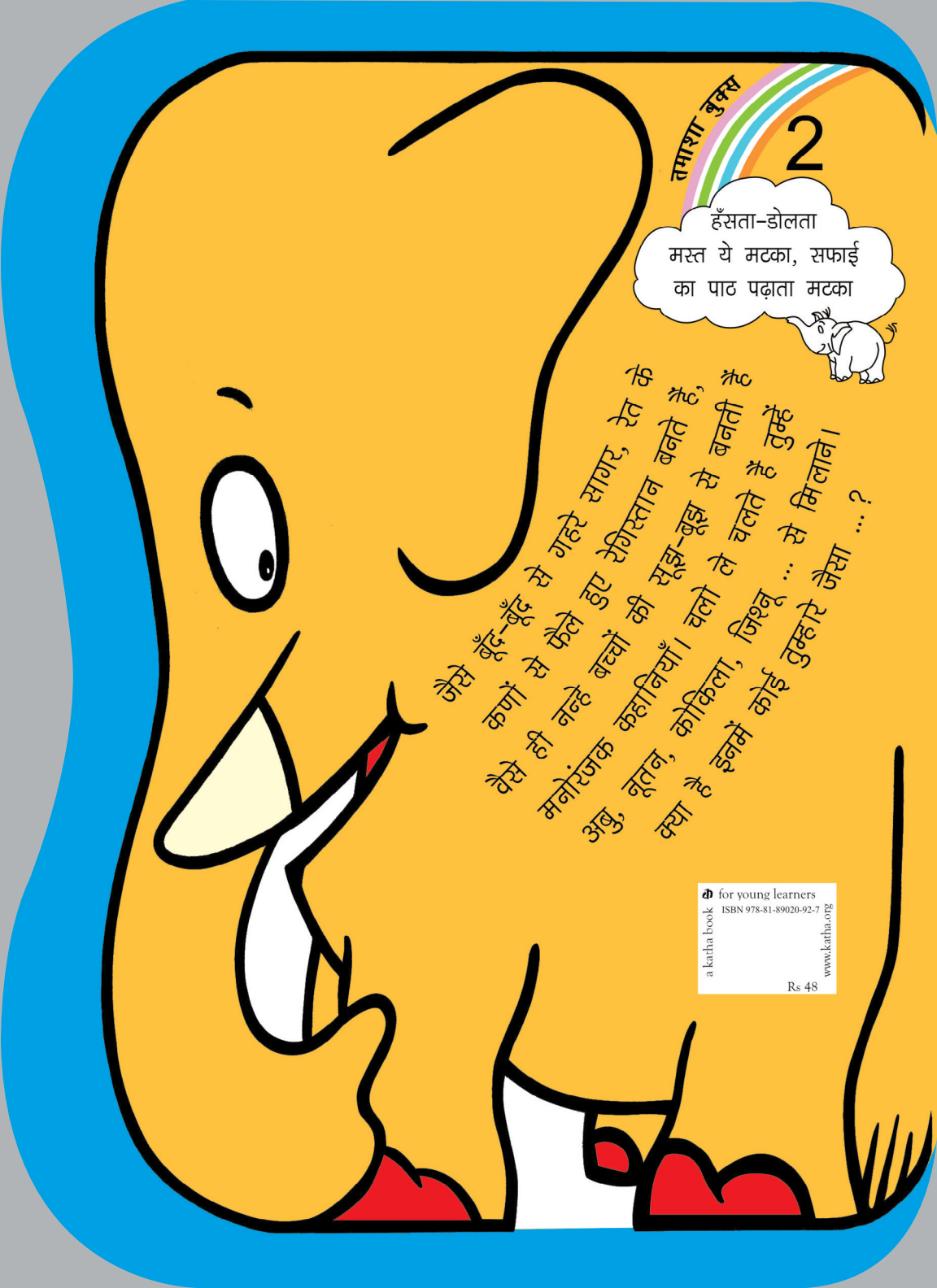
तमाशा बुक्स
2
हँसता-डोलता
मस्त ये मटका, सफाई
का पाठ पढ़ाता मटका
जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती तुम्हें
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अभु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?
a katha book
for young learners
ISBN 978-81-89020-92-7
www.katha.org
Rs 48